



श्री 1008 महामंडलेधर  
श्री स्वामी रामानंद  
दासजी महाराज  
श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा  
ट्रस्ट, तपोवन आश्रम  
स्व. पं. पू. 1008 श्री रामानंद जी  
तपोवन मंदिर, मोच गाँव, सुलत

वर्ष-11 अंक:238 ता. 18 मार्च 2023, शनिवार, कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत ( गुजरात ) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

CISF में पूर्व अग्निवीरों को दिया जाएगा 10 प्रतिशत आरक्षण, फिजिकल फिटनेस जांच में भी दी जाएगी छूट

नई दिल्ली। गृह मंत्रालय ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआइएसएफ) में पूर्व अग्निवीरों को 10 प्रतिशत आरक्षण देने का एलान किया है। इससे एक सप्ताह पहले बीएसएफ में भी पूर्व अग्निवीरों को आरक्षण देने की घोषणा की गई थी। मंत्रालय ने ऊपरी आयु सीमा में छूट की अधिसूचना भी जारी की है। यह छूट इस बात पर निर्भर करेगी कि अग्निवीरों के पहले बैच का हिस्सा है या बाद के बैचों का। पूर्व अग्निवीरों को आरक्षण देने के लिए गृह मंत्रालय ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल अधिनियम, 1968 के तहत नियमों में संशोधन किया है।

जान लें पहले और दूसरे बैचों के अग्निवीरों के लिए क्या है अंतर

पहले बैच के पूर्व अग्निवीरों को आयु सीमा में पांच साल और बाद के बैचों के अग्निवीरों को तीन साल की छूट दी जाएगी। मंत्रालय ने कहा कि पूर्व अग्निवीरों को शारीरिक दक्षता जांच में भी छूट दी जाएगी। बताते चलें कि केंद्र सरकार ने पिछले साल 14 जून को अग्निपथ योजना की घोषणा की थी।

सड़क दुर्घटना में साध्वी निरंजन ज्योति हुई घायल, राष्ट्रीय राजमार्ग 50 पर इनोवा से टकराई ट्रक

विजयपुर। केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति सड़क दुर्घटना में घायल हो गईं। कर्नाटक के विजयपुर में राष्ट्रीय राजमार्ग 50 पर उनकी टोयटा इनोवा, एक लोड्डेड ट्रक से टकरा गई। इस घटना में मंत्री और उनके ड्राइवर को मामूली चोट आई और उनका प्राथमिक उपचार किया गया। ट्रक चालक कथित तौर पर नशे में था और उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बता दें कि कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन में भाग ले रही थीं। इस साल कर्नाटक में चुनाव होने वाले हैं। पत्रकारों से बात करते हुए ज्योति ने कहा, भगवान की कृपा से मैं सुरक्षित हूँ।

राहुल गांधी की संसद सदस्यता होगी रद!

## भाजपा ने लोकसभा अध्यक्ष को लिखा पत्र, विशेष समिति बनाने की मांग

नई दिल्ली। विदेशी मंच से भारतीय लोकतंत्र पर सवाल खड़ा करने के मुद्दे पर भाजपा राहुल गांधी को चोटफा घेरने में लगी है। अदानी के विषय पर बिना साक्ष्य प्रधानमंत्री पर आरोप लगाने के मामले में राहुल का मामला पहले ही विशेषाधिकार समिति के समक्ष है।



की जाए और लोकसभा सदस्यता रद की जाए।

अब भाजपा सदस्य निशिकांत दुबे ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर शिकायत की है कि जिस तरह कैबिनेट में भारत के लोकतंत्र और संसद पर सवाल खड़ा किया गया और यूरोप व अमेरिका से हस्तक्षेप की बात कही गई वह किसी भी

भारतीय और खासकर सांसद के आचरण पर गंभीर सवाल खड़ा करता है। ऐसे में विशेष समिति बनाकर उनके आचरण की जांच

ऐसी ही एक विशेष समिति ने कुछ सदस्यों की जांच की थी और बाद में उनकी सदस्यता रद हो गई थी। बुधवार को निशिकांत ने लोकसभा अध्यक्ष को रूल 223 के तहत नोटिस देकर यह मांग की है। विस्तार से कैबिनेट में राहुल गांधी के बयानों का जिक्र करते हुए कहा गया है कि जिस तरह संसद और लोकतंत्र की गरिमा पर चोट की गई है वह चिंतनीय है। लिहाजा कार्रवाई होनी चाहिए। अगर इस विषय पर लोकसभा अध्यक्ष फैसला लेते हैं तो राहुल गांधी के खिलाफ दो मामलों में संसदीय समिति जांच कर रही होगी।

BJP सदस्य ने नोटिस देकर सदस्यता रद करने की मांग की-गौरतलब है कि संसद में सवाल के बदले कैश मामले में

पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। हालांकि, उसकी गिरफ्तारी की जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई थी। गुरुवार को उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इसके बाद इस मुद्दे को सार्वजनिक किया गया। पटेल के वरिष्ठ टि्वटर अकाउंट हैं। उनके हजारों फॉलोअर्स भी हैं। भाजपा गुजरात के महासचिव प्रदीपसिंह बाघेला भी उसके फॉलोअर्स की लिस्ट में हैं। उसने अपनी कश्मीर यात्रा के कई वीडियो और फोटो टि्वटर पर शेयर किए हैं। कई तस्वीरों में वह अर्धसैनिक बलों के जवानों से घिर देख रहे हैं। आखिरी तस्वीर 2 मार्च की है। अपने

दिवटर बायो में उसने अपनी शैक्षणिक याग्यता का भी उल्लेख जिक्र किया है। इसमें उसने वर्जीनिया स्थित कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी से

विश्लेषक और कैपेन मैनेजर बताया है। आपको बता दें कि ठग ने खुद को पीएमओ का अधिकारी बताते हुए पहली बार फरवरी में कश्मीर की यात्रा की थी।

उसके ट्वीटर हैंडल पर ऐसे कई वीडियो हैं, जिसमें वह अर्धसैनिक बल और पुलिस की सुरक्षा में घूमता दिख रहा है। वह पूरी सुरक्षा में बडगायम के दूधपथरी में बर्फ का आनंद लेता दिख रहा है। एक तस्वीर में वह लाल चोक पर क्लॉक टॉवर के सामने पोज देता दिख रहा है। सूत्रों का कहना है कि पटेल ने गुजरात से अधिक पर्यटकों को कश्मीर लाने और

दूधपथरी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ बैठकें भी की थी। दो सप्ताह के भीतर अपनी दूसरी कश्मीर यात्रा के दौरान वह संदेह के घेरे में आ गया। सूत्रों ने कहा कि एक आईएसए अधिकारी जो कि एक जिला मजिस्ट्रेट भी हैं, ने पिछले महीने उसकी यात्रा के बारे में पुलिस को बताया। खुफिया एजेंसियों ने पुलिस को एक ठग के बारे में सतर्क किया। उसकी कुंडली खंगालने के बाद पुलिस ने श्रीनगर के एक होटल से उसे गिरफ्तार कर लिया।

दिवटर बायो में उसने अपनी शैक्षणिक याग्यता का भी उल्लेख जिक्र किया है। इसमें उसने वर्जीनिया स्थित कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी से

## हिमंत बिस्वा सरमा बोले- असम में 600 मंदिरों पर ताला लगाया, आगे भी करेंगे; कांग्रेसियों को बताया आज के मुगल

कर्नाटक पहुंचे असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने दावा किया कि उन्होंने 600 मंदिरों को बंद कर दिया है और आगे भी बंद करेंगे। उन्होंने कांग्रेसियों को आज का मुगल बताया।

नई दिल्ली। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने दावा किया कि उन्होंने 600 मंदिरों को बंद कर दिया है और सभी मंदिरों को बंद करने का इरादा रखते हैं क्योंकि वह इसके बजाय स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय चाहते हैं। चुनावी राज्य कर्नाटक में बेलगावी के शिवाजी महाराज गार्डन में एक रैली को संबोधित करते हुए सरमा ने आरोप लगाया कि बांग्लादेश से लोग पूर्वोत्तर राज्य में आते हैं और इसकी सभ्यता और संस्कृति के लिए खतरा पैदा करते हैं। सरमा ने आगे कांग्रेस पर तीखा हमला भी बोला। कहा- कांग्रेस आज के मुगल हैं। समाचार एजेंसी एएनआई ने सरमा के हवाले से कहा, बांग्लादेश के लोग असम आते हैं और हमारी सभ्यता और संस्कृति के लिए खतरा पैदा करते हैं। मैंने 600 मंदिरों

को बंद कर दिया है और मेरा इरादा सभी मंदिरों को बंद करने का है क्योंकि हम मंदिरों नहीं चाहते। हम स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय चाहते हैं।

जिहादी गतिविधियों का अड्डा पिछले साल, सरमा ने दावा किया था कि असम जिहादी गतिविधियों का अड्डा बन गया है क्योंकि बांग्लादेश में अल कायदा से जुड़े आतंकी संगठनों के लिंक वाले पांच 'जिहादी' मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया गया था। सरमा ने कहा कि खुफिया सूचनाओं के अनुसार, बांग्लादेश से कम से कम छह एबीटी सदस्यों ने 2016 और 2017 के बीच अवैध रूप से भारत में प्रवेश किया और 'जिहादी' विचारधारा के बारे में स्थानीय युवाओं को प्रेरित करके आतंकी मॉड्यूल और स्लोपर सेल स्थापित किए।



आज के नए मुगल हैं कांग्रेसी और कहा कि पार्टी ने दिखाया कि भारत

युवावी राज्य कर्नाटक में बेलगावी के शिवाजी महाराज गार्डन में एक रैली को संबोधित करते हुए सरमा ने आरोप लगाया कि बांग्लादेश से लोग पूर्वोत्तर राज्य में आते हैं और इसकी सभ्यता और संस्कृति के लिए खतरा पैदा करते हैं। सरमा ने आगे कांग्रेस पर तीखा हमला भी बोला। कहा- कांग्रेस आज के मुगल हैं।

का इतिहास मुगल सम्राटों के बारे में था और कहा कि यह आज के नए मुगलों का प्रतिनिधित्व करता है। सरमा ने कहा, कभी दिल्ली के शासक मंदिरों को तोड़ने की बात करते थे, लेकिन आज पीएम मोदी के शासन में मंदिरों के निर्माण की बात कर रहे हैं। यह नया भारत है। कांग्रेस इस नए भारत को कमजोर करने

का काम कर रही है। कांग्रेस आज के नए मुगलों का प्रतिनिधित्व कर रही है। भारतीय इतिहास में मुगलों को उजागर करने के लिए कांग्रेस और कम्युनिस्टों पर आरोप लगाते हुए, असम के मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय इतिहास छत्रपति शिवाजी महाराज के बारे में भी था। उन्होंने कहा, कांग्रेस और कम्युनिस्टों ने दिखाया कि भारत का इतिहास बाबर, औरंगजेब और शाहजहां के बारे में था। मैं बताना चाहता हूँ कि भारत का इतिहास उनके बारे में नहीं है, बल्कि छत्रपति शिवाजी महाराज, गुरु गोबिंद सिंह के बारे में है। सरमा ने कहा कि अपने शासन के दौरान, औरंगजेब ने सनातन संस्कृति को समाप्त करने का प्रयास किया और आरोप लगाया कि विभिन्न लोगों को जबरन इस्लाम में परिवर्तित किया गया था।

## सिकंदराबाद के बहुमजिला कॉम्प्लेक्स में लगी भीषण आग, 4 महिलाओं समेत 6 की मौत

सिकंदराबाद। हैदराबाद के सिकंदराबाद में एक बड़ा हादसा हो गया। रात को एक बहुमजिला व्यावसायिक परिसर में लगी भीषण आग लगने से चार महिलाओं सहित कम से कम छह लोगों की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, स्वप्नलोक कॉम्प्लेक्स में आग रात करीब 8 बजे आग लगी थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस आगजनी में मरने वालों की पहचान शिवा, प्रशांत, प्रमिला, श्रावणी, वेनेला और त्रिवेणी के रूप में की गई है। समाचार एजेंसी पीटीआई ने एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के हवाले से बताया कि मौत का कारण धुएँ में सांस लेना हो सकता है। हालांकि, सही कारण जांच के बाद पता चलेगा। प्राथमिक जांच में आग लगने



का कारण शॉर्ट-सर्किट बताया जा रहा है। अधिकारी ने कहा, हमें सूचना मिली है कि छह लोगों की मौत हुई है। उन्होंने कहा कि आग पर काबू पा लिया गया है। पीटीआई ने कहा कि 12 लोगों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया और उनमें से छह की एक अस्पताल में

## उत्तर भारत में बदला मौसम का मिजाज, बिहार-उत्तराखंड में ओलावृष्टि; यूपी में बारिश शुरू

नई दिल्ली। उत्तर भारत के ज्यादातर हिस्सों में मौसम में आंशिक बदलाव नजर आया। पंजाब के गुरदासपुर और पठानकोट में बुधवार रात बारिश के साथ ओले पड़ने के कारण खेतों में गेहूँ की फसल बिख गई तो राजस्थान व उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में हल्की बरसात हुई। बिहार के मुजफ्फरपुर में भी बारिश के साथ ओले पड़े हैं।

यूपी में बारिश से तापमान में गिरावट यूपी की राजधानी लखनऊ समेत कई शहरों में आज सुबह से बारिश हो रही है, जिससे पांच से सात डिग्री तक तापमान गिरावट दर्ज की गई है। मौसम विभाग ने अगले पांच दिन तक दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और यूपी में आंशिक रूप से बादल छाए रहने और वर्षा होने का पूर्वानुमान व्यक्त किया है। 20 और 21 तारीख को तेज जिसका परिस्तर में एक कार्यालय था।

मौसम में बदलाव के लिए तीन कारक जिम्मेदार



बिहार में ओलावृष्टि

इसके अलावा निचले स्तर पर चल रही नमी भरी हवाओं और मध्य स्तर पर बह रही शुष्क पश्चिमी हवाओं का टकराव भी मौसम में आए इस बदलाव की एक बड़ी वजह है। गर्मी से मिलेगी राहत महेश पलावत ने बताया कि इन पांच दिनों के दौरान गर्मी से थोड़ी राहत रहेगी, तापमान में कुछ गिरावट आएगी, लेकिन 22 मार्च से तापमान और गर्मी में फिर से बढ़ोतरी होने लगेगी। लुधियाना स्थित पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विभाग प्रमुख डा. पीके किंगरा ने बताया कि खराम मौसम की संभावना को देखते हुए किसानों को गेहूँ की फसल की सिंचाई नहीं करने की हिदायत जारी की गई है। जयपुर मौसम केंद्र के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि प्रदेश में वेस्टर्न डिस्टरबेंस के कारण हल्की से मध्यम बारिश के साथ आंधी की दौर भी चलेगा। ओले भी गिर सकते हैं।

## 10 मिनट की दूरी 40 मिनट में हो रही पूरी, चिराग दिल्ली फ्लाईओवर बंद होने से राजधानी के इन रास्तों पर लग रहा जाम



बढ़ी- राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर के चलते धौलाकुआं से रजोकेरी गुरुवार को यातायात मार्ग परिवर्तन जाने वाले वाहन चालकों को भी

परेशानी का सामना करना पड़ा। ट्रैफिक पुलिस ने अपने ट्वीट में यहां पर यातायात में आ रही परेशानी की जानकारी देते हुए दिल्ली से गुरुग्राम के लिए सफर करने वाले लोगों को ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने की सलाह दी। वहीं, नेहरू प्लेस से आईआईटी फ्लाईओवर की ओर जाने वाले कैरिज-वे पर भी जाम की सूचना लोगों को दी। चिराग दिल्ली फ्लाईओवर पर चल रहे मरम्मत कार्य के चलते यहां पर वाहन चालकों को 15 से 20 मिनट तक के जाम का सामना करना पड़ा।

मुझे महिलापुर से सहैल बाईर तक जाने में 40 मिनट ज्यादा लग गए। पहले यह दूरी 10 से 15 मिनट में पूरी हो जाती थी। -दिव्या कथुरिया, डिफेंस कॉलोनी निवासी मैं लगातार दूसरे दिन चिराग दिल्ली के पास भयंकर जाम में फंसा हूँ। अब जब तक यहां काम पूरा नहीं हो जाता है मैं मेट्रो से सफर करूंगा। -सुनील अग्रवाल, आरकेपुरम गंगलवा को मैं एनएच-48 पर दो घंटे जाम में फंसा रहा। इस कारण गुरुवार को घर से जल्दी निकला। नतीजतन, जाम कम मिला। -सुनील यादव, सीपी में काम करने वाले क्या बोले लोग...

## गुजरात के ठग ने खुद को बताया पीएमओ का अधिकारी, कश्मीर में मिली जैड+ सुरक्षा; ऐसे धराया

नई दिल्ली, श्रीनगर। गुजरात के एक ठग किरण भाई पटेल ने खुद को प्रधानमंत्री कार्यालय का अधिकारी बताकर जम्मू-कश्मीर प्रशासन से जेड प्लस कैटेगरी की सुरक्षा ले ली। उसे बुलेटप्रूफ गाड़ी की यात्रा और फाइव स्टार होटल की सुविधा भी दी गई। इससे पहले भी वह दो बार श्रीनगर की यात्रा कर चुका है। इस दौरान उसने वरिष्ठ अधिकारियों के संग बैठक भी की थी। पटेल खुद को प्रधानमंत्री कार्यालय में रणनीति और अभियानों के लिए अतिरिक्त निदेशक के तौर पर पेश करता था। 11 दिन पहले उसकी भेद खुल गई और

पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। हालांकि, उसकी गिरफ्तारी की जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई थी। गुरुवार को उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इसके बाद इस मुद्दे को सार्वजनिक किया गया। पटेल के वरिष्ठ टि्वटर अकाउंट हैं। उनके हजारों फॉलोअर्स भी हैं। भाजपा गुजरात के महासचिव प्रदीपसिंह बाघेला भी उसके फॉलोअर्स की लिस्ट में हैं। उसने अपनी कश्मीर यात्रा के कई वीडियो और फोटो टि्वटर पर शेयर किए हैं। कई तस्वीरों में वह अर्धसैनिक बलों के जवानों से घिर देख रहे हैं। आखिरी तस्वीर 2 मार्च की है। अपने



दिवटर बायो में उसने अपनी शैक्षणिक याग्यता का भी उल्लेख जिक्र किया है। इसमें उसने वर्जीनिया स्थित कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी से

विश्लेषक और कैपेन मैनेजर बताया है। आपको बता दें कि ठग ने खुद को पीएमओ का अधिकारी बताते हुए पहली बार फरवरी में कश्मीर की यात्रा की थी। उसके ट्वीटर हैंडल पर ऐसे कई वीडियो हैं, जिसमें वह अर्धसैनिक बल और पुलिस की सुरक्षा में घूमता दिख रहा है। वह पूरी सुरक्षा में बडगायम के दूधपथरी में बर्फ का आनंद लेता दिख रहा है। एक तस्वीर में वह लाल चोक पर क्लॉक टॉवर के सामने पोज देता दिख रहा है। सूत्रों का कहना है कि पटेल ने गुजरात से अधिक पर्यटकों को कश्मीर लाने और

दूधपथरी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ बैठकें भी की थी। दो सप्ताह के भीतर अपनी दूसरी कश्मीर यात्रा के दौरान वह संदेह के घेरे में आ गया। सूत्रों ने कहा कि एक आईएसए अधिकारी जो कि एक जिला मजिस्ट्रेट भी हैं, ने पिछले महीने उसकी यात्रा के बारे में पुलिस को बताया। खुफिया एजेंसियों ने पुलिस को एक ठग के बारे में सतर्क किया। उसकी कुंडली खंगालने के बाद पुलिस ने श्रीनगर के एक होटल से उसे गिरफ्तार कर लिया।









# बीजों का सुरक्षित भण्डारण

पिंकी शर्माए पूनम यादव

पादप व्याधि विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर-303329

कृषि में उन्नत बीज का स्थान सर्वाधिक है क्योंकि उन्नत खेती को नीव एक अच्छे बीज पर ही आधारित है अतः बीजों का उचित भण्डारण बहुत जरूरी है। बीज पैदा करके उसे बोने तक भण्डारण का महत्वपूर्ण स्थान है। भण्डारित किये गये बीजों में ज्यादातर नुकसान कीटों द्वारा ही होता है। इसके अलावा चूहे, चिड़िया, दीमक एवं फंफूँ आदि द्वारा भी नुकसान होता है। बीजों में कीट पैदा होने से बीजों की अंकुरण क्षमता, ओज एवं गुणवत्ता पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। इससे खराब बीज न तो बाने लाइक और न ही खाने लाइक रहता है। इसलिए बीजों का भण्डारण पूरी सावधानी एवं देखरेख के साथ करना चाहिए।

## भण्डारित बीजों का नुकसान निम्न कारकों पर निर्भर करता है

1. बीज में अधिक आर्द्रता का होना।
2. खेत से ही संक्रमित बीजों का भण्डारण
3. कीटों द्वारा संक्रमित भण्डारण
4. भण्डारण के दौरान ताप एवं नमी में वृद्धि
5. भण्डारण में ऑक्सीजन की उपलब्धता



## गोभीवर्गीय में पोषक तत्वों की आवश्यकता

**भूरापन या ब्राउनिंग** - यह समस्या गोभीवर्गीय फसलों में बोरान की कमी से होता है।

**लक्षण** - भूरापन में शुरूआत में फूल में जल अवशोषित धब्बे पड़ जाते हैं, जो कि बाद में बड़े हो जाते हैं। इसके बाद तने में भी जल अवशोषित धब्बे पड़ते हैं तथा तना अंदर से खोखला हो जाता है। यदि भूरापन का प्रकोप ज्यादा होता है तो पूरा फूल में कुछ दिन बाद गुलाबी या भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं।

**उपचार** - बोरान की कमी को दूर करने के लिये 10-15 किलो बोरेक्स प्रति हेक्टर भूमि में पौध रोपण के समय देना चाहिए अथवा जब फसल खड़ी हो 0.1 प्रतिशत बोरेक्स घोल का छिड़काव करना चाहिए प्रथम छिड़काव पौध रोपण के दो सप्ताह पश्चात और दूसरा छिड़काव फूल बनने से दो सप्ताह पहले करना चाहिए।

**क्लिपटेल** - यह लक्षण गोभीवर्गीय फसलों में मालीब्डिनम नामक तत्व की कमी के कारण होता है।

**लक्षण** - मुख्यतः मालीब्डिनम की कमी अम्लीय भूमि में हो जाती है अर्थात् मालीब्डिनम अनुपलब्ध रूप से हो जाता है, जिससे पौधे इस तत्व का अवशोषण नहीं कर पाते और क्लिपटेल के लक्षण दिखाई देते हैं, इसमें शुरूआत में पौधे की वृद्धि रुक जाती है और पत्तियाँ सिकुड़ कर सफेद पड़ने लगती हैं तथा कुछ दिन बाद पत्तियाँ अपना आकार

हमारे देश में अधिकतर किसान बीज स्वयं भण्डारित करते हैं और उनमें से अधिकतर बीजों का नुकसान कीटों से होता है। इन भण्डारित बीजों (खपरा, सुरसुरी, घून, पंतगा, तीली आदि) को लगभग सभी किसान जानते हैं परन्तु इन बीजों के प्रकोप से बचने के लिए उचित भण्डारण एवं नियंत्रण पर ध्यान देकर होने वाले भौतिक नुकसान के साथ-साथ बीज की अंकुरण क्षमता एवं ओज को भी बरकरार रख सकते हैं।

बीजों में लगने वाले प्रमुख कीट:-  
भण्डारण के दौरान कीटों की लगभग चार दर्जन प्रजातियाँ बीजों को नुकसान पहुँचाती हैं। जिनमें से 10-15 प्रजातियाँ ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न प्रकार के कीटों द्वारा विभिन्न प्रकार बीजों का नुकसान किया जाता है जिनमें से कुछ दानों को बाहर से खाते हैं। एवं कुछ अन्दर रहकर खाते हैं, जिनमें से प्रमुख कीट निम्नलिखित हैं।

1. टनाज की फसलों के बीज:- सूंड वाली सुरसुरी (सिटोफ्लिस, ओरायजी), चावल की सुरसुरी (ओराइजीफ्लिस सुरी नामेनसिस), गोदाम का पंतगा (केडा काटिला), मक्का का पंतगा (कोरसाइरा सिफेलोनिका), आटे का कीट (ट्राइबोलियम कैस्टेनियम), एवं खपरा बीटल (ट्रोडोडरमा ग्रेनेरियम)।
2. दलहनी फसलों के बीज:- दोरा (चार प्रजातियाँ- कैलोसोब्रुकस मैकुलेटस, कै. चाइनेनसिस, कै. एनालिस

एवं ब्रुकस पाइसोरम घुन (राइजोपरथा डोमिनिका), खपरा बीटल (ट्रोडोडरमा ग्रेनेरियम), चावल पंतगा (कोरसाइरा सिफेलोनिका), एवं गोदाम का पंतगा (केडा काटिला) समय छाया में सुखाकर बोरों या थैलियों में भरकर भण्डारित करना चाहिए।

3. बीजों में उचित नमी:- बीजों को भण्डारित करने से पूर्व यह जाँच कर ले कि बीजों में सामान्यतः 10 प्रतिशत से अधिक नमी न हो, लेकिन मूँगफली एवं सरसों में 7 प्रतिशत एवं धान में 12 प्रतिशत एवं अरखड़ी में 8 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होनी चाहिए।

4. भण्डारण कक्ष/पात्र को कीट मुक्त करना:- बीजों को जिस किसी कक्ष या पात्र में भण्डारित करना हो उसे भण्डारण पूर्व कीट मुक्त करना चाहिए। यदि भण्डारण कमरे या गोदाम में करना है तो उसे अच्छी तरह साफ करके मैलाधियान, क्लोरोपाइरीफॉस की 1 लीटर मात्रा 100 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। यदि बीज को मटके में भण्डारित करना हो तो मटके के अन्दर व बाहर 10 मि.ली. मैलाधियान का छिड़काव करें।

5. बीज भण्डारण के पश्चात् बीजों के नमी की वृद्धि रोकना एवं प्रधूमन करना:- बीज भरे बोरों या थैलियों को लकड़ी के तख्ते या पॉलीथीन चादर या बॉस की चटाई पर रखना चाहिए ताकि उनमें नमी का प्रवेश न हो। वर्षा ऋतु में भण्डारण गृह में भण्डारित बीज होने के कारण कीटनाशी द्वारा उपचारित नहीं किया गया तो खेत से आये कीटों को नष्ट करने हेतु बीज को एल्युमिनियम फॉस्फाइड से 6-9 ग्राम मात्रा प्रति टन बीज के हिसाब से प्रधूमन करना चाहिए।

6. कीट प्रकोप पर निगरानी एवं कीटनाशी का छिड़काव:- भण्डार कक्ष को प्रत्येक 15 दिन में एक बार जरूर देखना चाहिए ताकि बीज में कीट या फंफूँ पर कोई जीवित कीट दिखना देने पर समय पर आवश्यकतानुसार कीटनाशी का छिड़काव या प्रधूमन किया जा सके। सामान्यतः भण्डार कक्ष एवं बोरों पर 15 दिन के अन्तराल पर मैलाधियान, क्लोरोपाइरीफॉस की 1 लीटर मात्रा 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। बीज भण्डारण में प्रधूमन द्वारा कीटों से बचाव छिड़काव की अपेक्षा अधिक लाभकारी है इसलिए प्रधूमन का ही अधिकतम प्रयोग करें।

## सावधानियाँ

1. बीजोपचार करते समय कीटनाशी को खुले हाथों से न छुए बल्कि किसी ड्रम में डालकर हिलाकर उपचारित करें।
2. उपचारित बोरियों या थैलियों पर स्पष्ट लिखा होना चाहिए।
3. कीटनाशी बच्चों की पहुँच से दूर रखनी चाहिए।
4. कीटनाशकों का छिड़काव बदल-बदलकर करें।
5. प्रधूमन सदैव प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा ही करवावो।

# बगीचों की स्थापना व प्रबंधन

## नवीन उद्यान का विन्यास (लेआउट) कैसे करें-

नवीन उद्यान का विन्यास (रेखांकन) एक बहुत तकनीकी एवं महत्वपूर्ण क्रिया है। सर्वप्रथम क्षेत्रफल नाप लिया जाये तथा उसका क्षेत्रफल ज्ञात करें फिर चयनित फल एवं उसकी प्रजाति के आधार पर निर्धारित करें कि कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की दूरी निर्धारित करें। उद्यान रेखांकन करते समय निम्नलिखित उद्यान स्थल निर्धारित करें-

- सड़क एवं मार्ग
- फार्म हाउस (कार्यालय, भंडार, निवास) के लिए स्थल
- सिंचाई पद्धति के लिये पम्प हाउस, नलकूप, कुआँ, फार्म पाँड का स्थान निर्धारित करें। आजकल ड्रिप एवं फव्वारा सिंचाई प्रचलित है। अतः उसके रेखांकन के लिये स्थल निर्धारित करें।

- जल निकास हेतु नाली आदि निर्माण हेतु स्थल
- पौधों को लगाने का स्थल
- फार्म पर कम्पोस्ट, नाडेप, केंचुआ खाद आदि का स्थल
- बगीचे के लिये स्वयं की रोपणी हेतु भी स्थल निर्धारित करें।

**नवीन बगीचे के लिये प्रारंभिक तैयारियाँ** - स्थल निर्धारण के पश्चात् भूमि की सफाई, सर्वेक्षण, मिट्टी परीक्षण, समतलीकरण, मिट्टी की जुताई, बगीचे के चारों ओर बागडू-तार, प्रवेश की दीवार, वायु अवरोध लगाएँ।

**फल पौध रोपण** - फल पौध रोपण की प्रचलित पद्धतियाँ निम्न प्रकार की हैं - **वर्गाकार पद्धति** - वृक्ष की आवश्यकता के अनुसार वर्ग का आकार रखा जाता है। इस पद्धति में पौधे वर्ग के कोने पर लगाए जाते हैं।



यह एक महत्वपूर्ण कार्य है। भूमि में मिट्टी की गहराई को ध्यान में रखते हुए फल चयन करें तथा उसकी भावी वृद्धि एवं विकास को ध्यान में रखते हुए रोपण के लिए गड्डे वर्गाकार पद्धति से या मिट्टी आकार द्वारा खोदें।

## रोपण के लिये पौधों का चयन



● पौधे जो वानस्पतिक तरीके या टिशू कल्चर अथवा बीज से तैयार हो उनकी पूरी विश्वसनीयता की जानकारी प्राप्त करके ही लें। उनकी पे डिग्री ज्ञात कर लें, जब तक शासकीय/पंजीकृत रोपणी से ही पौधे लें तथा पौधों पर टैग लगा हो।

● प्रत्येक पौधे को देखें कि उसकी जड़ों जिसमें पौधों की जड़ पंकी हो वह सही हो। ग्राफ्ट की जड़े सायन एवं रूट स्टॉक की मोटाई बराबर हो तथा सही तरीके से जुड़ी हों।

● पौधे की बीमारी आदि से ग्रसित न हों। उनकी आयु आदि ज्ञात कर लें।

● जो पौधे चाहे ग्राफ्ट हो, गूटी कलम आदि जैसे भी हो उन्हें भली-भाँति परख लें तथा एक सप्ताह तक क्यारी में उतार कर रखें। जो पौधे सही तरह के स्वस्थ हों उन्हें ही लगायें।

● पौधे लगाते समय पौधा गड्डे के बीज में सीधा लगाया जाये। जड़ को दोनों

हाथों से ढीला बांध भली-भाँति गड्डे की मिट्टी के साथ दवाएँ जिससे वह भली-भाँति स्थिर हो जावे सिंचाई करें। रोपण क्रिया जुलाई, अगस्त, सितम्बर या फरवरी मार्च में लगायें। उसकी सुरक्षा करें तथा कुछ पौधे पृथक रखें जिससे मृदा पौधों के स्थान पर रोपण करें।

**फल देने वाले बगीचों का प्रबंधन** - जो पौधे फलन स्थिति या किशोर अवस्था में हो उनकी देखभाल एवं वांछित औद्योगिक क्रियाएं क्षेत्र के लिये अनुशंसित विधि से करें। जैसे-

कांटछांट का क्रान्तन क्रिया कृषि क्रियाएं अनुशंसित खाद एवं उर्वरक निर्धारित मात्रा में डालें, तने को पानी के सम्पर्क में सीधे न आने दें इसलिये उनकी आयु के अनुसार मिट्टी जड़ के ऊपर लगाये, समय पर सिंचाई, निंबाई तथा पौध संरक्षण उपाय करें। फलों की तुड़ाई करें। आम के वृक्षों पर माम फोर्मेसन हो उसे काटकर पृथक करें। जिन पौधों के तने कमजोर हो उन्हें सहारा दें। पौधे के मूल वृद्ध से निकलने वाली शाखाओं को काट दें। पौधोंको सही आकार देने के लिए कटाई, छंटाई जरूरी है।

**आयताकार** - इस पद्धति में कतार से कतार की दूरी तथा पौधों की दूरी निर्धारित की जाती है।

**त्रिभुजाकार या षट्भुजाकार पद्धति** - यह वर्गाकार की परिवर्तित पद्धति है इसके वर्ग के मध्य से एक और पौधा बनाया जाता है। आजकल संकर प्रजातियाँ आम में विकसित की गयी हैं उन्हें कम दूरी पर बनाया जाता। इसके अतिरिक्त हाईडेंसिटी पद्धति से रोपण ऊँचाई के आधार पर किया जाता है।

**कट्टर के आधार पर रोपण** - ऊँची-नीची एवं ढाल भूमि में समोच्च (कट्टर) के आधार पर रोपण किया जाता है।

**पौधों की दूरी निर्धारित करना एवं वृक्षों की वृद्धि को ध्यान में रखकर पौध रोपण के लिये गड्डों का खोदना** -

**बटनिंग** - बटनिंग की समस्या गोभी वर्गीय फसलों के कई कारणों से होती है जैसे अधिक उम्र के रोप के कारण, नाइट्रोजन की कमी के कारण या समय के अनुसार उचित किस्मों को न लगाने से ऐसा होता है।

**लक्षण** - फूलों का विकसित न होकर छोटा रह जाना बटनिंग कहलाता है। इसमें फूलों का आकार छोटा हो जाता है तथा कम विकसित पत्तियाँ होती हैं।

**उपचार** - बटनिंग को रोकने के लिये अगती या पिछेती किस्में अनुशंसित समय पर ही लगाएँ, पौधे की वृद्धि चाहे वह नर्सरी में हो या खेत में नहीं रुकनी चाहिए। अधिक सिंचाई न करें। जो पौधा नर्सरी में अधिक दिन के हो उन्हें खेत में न लगाएँ और नाइट्रोजन की उचित मात्रा पौधों को समय-समय पर दें।

**रेसीयनेस** - रेसीयनेस के लक्षण मुख्यतः वातावरण में अनुकूल तापमान की कमी, अधिक नाइट्रोजन देने के कारण तथा अधिक आर्द्रता के कारण होती हैं। **लक्षण** - समय से पूर्व अविकसित कली को रेसीयनेस कहते हैं। इसमें फूल की ऊपरी सतह ढीली पड़ जाती है तथा सफेद छोटी कलिका बन जाती है।

**उपचार** - रेसीयनेस से उपचार के लिये उचित किस्म का चयन करें, समय पर पौधों की रोपाई करें, नाइट्रोजन की उचित मात्रा का प्रयोग करें तथा प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।







रिपोर्ट : 10 लाख प्रशंसकों ने जताई अर्जेंटीना का मैच देखने की इच्छा, किया आवेदन

व्यूस आयरस । अर्जेंटीना का विश्व चैंपियन बनने के बाद स्वदेश में पहला मैत्री मैच देखने के लिए 10 लाख से अधिक प्रशंसक ऑनलाइन टिकट खरीदने के लिए उमड़ पड़े। लियोनेल मेसी की टीम 23 मार्च को पनामा के खिलाफ व्यूस आयरस के मोनटेपल डे नुनेज स्टेडियम में मैत्री मैच खेलेगी। अर्जेंटीना के फुटबॉल संघ ने इस मैच के लिए 63000 टिकट बिक्री के लिए रखे थे जिनकी कीमत 57 अमेरिकी डॉलर से 240 अमेरिकी डॉलर रखी गई थी। टिकटों की ऑनलाइन बिक्री शुरू होने के कुछ समय बाद ही मैच के सभी टिकट बिक गए। टिकटों की कीमतों ने आर्थिक संकट से जूझ रहे दक्षिण अमेरिका के इस देश में चर्चा शुरू हो गई है लेकिन इसके बावजूद सभी टिकट केवल दो घंटों में बिक गए। अर्जेंटीना 28 मार्च को सेंटियागो डेल एस्टेरो प्रांत में कुराकाओ के खिलाफ एक और मैत्री मैच खेलेगा। उस मैच के टिकट अभी उपलब्ध नहीं हैं।



## भारत के पास डब्ल्यूटीसी फाइनल जीतने का अच्छा मौका, हमारे पास एक अच्छी टीम है : सचिन

(एजेंसी)।

सचिन तेंदुलकर ने कहा कि भारत के पास जून में लंदन के केनिंगटन ओवल में खेले जाने वाले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2021-23 फाइनल जीतने का अच्छा मौका है। इस महीने की शुरुआत में, न्यूजीलैंड ने क्राइस्टचर्च में हेगले ओवल में शुरुआती टेस्ट में श्रीलंका को एक विकेट से हराकर भारत को डब्ल्यूटीसी के फाइनल में प्रवेश करने में मदद की थी। भारत ने नागपुर और दिल्ली टेस्ट जीतकर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी भी बरकार रखी, जिसके बाद उन्होंने सीरीज

2-1 से जीत ली। तेंदुलकर, जिन्हें खेल के महान खिलाड़ियों में से एक माना जाता है, ने कहा कि भारत को परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए टीम चुनने की जरूरत है। तेंदुलकर ने इंडिया टुडे कांक्लेव 2023 में कहा- हमने अच्छा खेला है और हमारे पास एक अच्छी टीम है, एक संतुलित टीम है। उन स्थितियों में, आपको ऊपरी स्थितियों को देखना होगा और फिर भी पूर्वानुमान चलाने में आता है। टेस्ट क्रिकेट में आपको अगले पांच दिनों के लिए परिस्थितियों को समझना होगा और उसके अनुसार टीम चुननी होगी। उन्होंने कहा- सही संतुलन बनाने के लिए टीम में अतिरिक्त स्पिनरों

को रखना एक कसान के लिए थोड़ा चुनौतीपूर्ण होगा। मैं सिर्फ भारत के नजरिए से सोच रहा हूँ कि ऑस्ट्रेलियाई लोगों को वह करने दें जो वे करना चाहते हैं। हमारे पास बहुत अच्छा मौका है। 2021 में भारत ने WTC 2019-21 का फाइनल खेला, लेकिन बर्मिंघम के एजबेस्टन में केन विलियमसन की न्यूजीलैंड से हार गए। तेंदुलकर ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से गेंद को चमकाने के लिए लार के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने के अपने फैसले पर पुनर्विचार करने को भी कहा।



उन्होंने कहा, मैं एक चिकित्सा विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन गेंद पर लार वापस आनी चाहिए। यह 100 से अधिक वर्षों से हुआ है और कुछ भी कठोर नहीं हुआ है।

हां, 2020 में सही फैसला लिया गया था, लेकिन वह अब हमारे पीछे है। अब, यह कुछ ऐसा है जिस पर विचार किया जाना चाहिए, तेंदुलकर ने कहा।

## पेन ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट से संन्यास लिया

होवार्ट । (एजेंसी)।

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व टेस्ट कप्तान टिम पेन ने खेल के सभी पारुषों को अलविदा कह दिया है। पेन ने यहां क्रीडलैंड के खिलाफ धरेलू शोफील्ड शिल्ड प्रथम श्रेणी मैच के बाद संन्यास की घोषणा की। पेन ने पहले ही टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। विकेटकीपर बल्लेबाज पेन ने ऑस्ट्रेलियाई टीम की ओर से 35 टेस्ट मैच खेले हैं जिसमें से उन्होंने 2021 तक 23 टेस्ट मैचों में उन्होंने कप्तानी की। दक्षिण अफ्रीका में 2018 में गेंद से छेड़छाड़ मामले के बाद स्टीव स्मिथ की जगह उन्हें कप्तान बनाया गया था। पेन को साल 2021 में एक विवाद के बाद कप्तानी छोड़नी पड़ी थी। उनपर एक पूर्व कर्मचारी को आपत्तिजनक संदेश

भेजने के आरोप थे। पेन ने साल 2010 में पाकिस्तान के खिलाफ इंग्लैंड में पहला टेस्ट खेला था। उनके नाम टेस्ट मैचों में 32.63 की औसत से रन बनाए और उनका उच्चतम स्कोर 92 रन रहा। इसके अलावा विकेटकीपर के रूप में उनके नाम 157 कैच और स्टंप हैं। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की ओर से 35 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच भी खेले हैं।

पेन ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 82 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले हैं जिसमें से उन्होंने 2021 तक 23 टेस्ट मैचों में उन्होंने कप्तानी की। दक्षिण अफ्रीका में 2018 में गेंद से छेड़छाड़ मामले के बाद स्टीव स्मिथ की जगह उन्हें कप्तान बनाया गया था। पेन को साल 2021 में एक विवाद के बाद कप्तानी छोड़नी पड़ी थी। उनपर एक पूर्व कर्मचारी को आपत्तिजनक संदेश



## स्विट्ज़रलैंड, अल्कारेज बीएनपी ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे

इंडियन वेल्स । पौलैंड की इगा स्विट्ज़रलैंड और कजाकिस्तान की रायबकिनाबीएनपी परिवारा ओपन टैनिस् टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंच गयीं हैं। स्विट्ज़रलैंड ने जहां कार्टर फाइनल में सोराना क्रिस्टिया को दो सेट तक चले मुकाबले में आसानी से 6-2, 6-3 से पराजित किया। वहीं रायबकिना ने इससे पहले हुए एक अन्य मुकाबले में करोलिना मुचोवा को तीन सेट तक चले संघर्षपूर्ण मुकाबले में 7-6 (4), 2-6, 6-4 से हराया था। अब स्विट्ज़रलैंड का सेमीफाइनल में मुकाबला रायबकिना से होगा। वहीं पुरुष वर्ग की बात करें तो कार्लोस अल्कारेज सेमीफाइनल में पहुंच गये हैं। अल्कारेज ने कार्टरफाइनल में फेलिक्स अंगूर को हराया।

## युवराज ने ऋषभ से मुलाकात कर उनका मनोबल बढ़ाया

मुम्बई । (एजेंसी)।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह ने कार हादसे से उबर रहे आक्रामक विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत से मुलाकात कर उनका हाल-चाल जाना और उनका मनोबल बढ़ाया है। युवराज ने इस मुलाकात की एक तस्वीर भी सोशल मीडिया पर साझा करते हुए कहा कि यह चैंपियनशिप फिरो से उभरेगा। तस्वीरों में युवराज, ऋषभ के साथ बैठे नजर आ रहे हैं। ऋषभ गत वर्ष दिसंबर में कार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गये थे। इसके बाद उनके घुटने की सर्जरी हुई थी। अभी वह

अपने घर में हैं जहां उनका इलाज चल रहा है। युवराज ने ऋषभ के साथ फोटो साझा कर लिखा, बच्चों के कदमों पर। यह चैंपियन जल्द उभरेगा। उनके साथ बातचीत करना अच्छा रहा। वह सकारात्मक और हास्यपूर्ण आदमी है। आपके लिए अधिक शक्ति ऋषभ। तस्वीर के आते ही ही सोशल मीडिया पर जमकर कमेंट्स आने लगे। ऋषभ ने कुछ दिन पहले ही अपनी इन्स्टाग्राम स्टोरी पर शतरंज खेलते हुए अपनी एक तस्वीर भी साझा की थी। एक छल पर टेबल पर उसके सामने शतरंज की बिसात पड़ी थी, साथ ही एक खाली कुर्सी भी थी। वह किसी के

साथ शतरंज खेलते हुए दिखाई दिए पर यह स्पष्ट नहीं है कि विकेटकीपर-बल्लेबाज किसके साथ खेल रहा था। उन्होंने तस्वीर के साथ लिखा, - क्या कोई अंदाजा लगा सकता है कि कौन खेल रहा है? इससे पहले, इस क्रिकेटर ने लिगामेंट टियर से संबंधित अपनी सर्जरी पर जानकारी दी थी। इस विकेटकीपर बल्लेबाज ने ट्विटर पर लिखा था- मैं सभी समर्थन और शुभकामनाओं के लिए आभारी और आभारी हूँ। मुझे धन्यवाद। गौरवतल है कि यह क्रिकेटर अब तेजी से ठीक हो रहा है।



और मैं आगे की चुनौतियों के लिए तैयार हूँ। बीसीसीआई और सरकारी अधिकारियों को उनके अविश्वसनीय समर्थन के लिए धन्यवाद। गौरवतल है कि यह क्रिकेटर अब तेजी से ठीक हो रहा है।



संक्षिप्त समाचार

## ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियनशिप : लक्ष्य हारे, त्रीसा-गायत्री कार्टरफाइनल में पहुंची

बर्मिंघम । भारत के लक्ष्य सेन ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियनशिप के पुरुष एकल मुकाबले में हार के साथ ही बाहर हो गये हैं। लक्ष्य को डेनमार्क के एंडर्स एंटोनसन के खिलाफ 52 मिनट तक चले मुकाबले में 13-21, 15-21 से हार का सामना करना पड़ा। वहीं भारत के ही साल्वकसाईराज रेकारेडू और चिराग शेठी की पुरुष युगल जोड़ी को चीन के लियान्ग वेई केंग और वांग चांग ने 21-10, 17-21, 19-21 से हराया। एक अन्य मुकाबले में भारत की ही त्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की महिला युगल जोड़ी जीत के साथ ही कार्टरफाइनल में पहुंच गयीं हैं। त्रीसा और गायत्री ने जापान की युकी फुकुशिमा और सायाका हिरोटा की जोड़ी को एक रोमांचक मुकाबले में 21-14, 24-22 से हराया। अब इस भारतीय जोड़ी का सामना ली वेन मैई और लिचू जुआन जुआन की चीनी जोड़ी से होगा।

## विश्व रैंकिंग हमारे लिए मायने नहीं रखती: हॉकी कप्तान हरमनप्रीत सिंह

राउरकेला। हॉकी प्रो लीग 2022-23 में लगातार चार प्रभावशाली जीतों के बाद भारतीय पुरुष हॉकी टीम ताजा विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गयी है लेकिन कप्तान हरमनप्रीत सिंह का कहना है कि खिलाड़ियों की प्रार्थना अपने मोंकों को भुनाना और विपक्षी टीम पर दबाव बनाना है ना कि रैंकिंग के बारे में सोचना। हॉकी प्रो लीग 2022-23 में लगातार चार प्रभावशाली जीतों के बाद भारतीय पुरुष हॉकी टीम ताजा विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गयी है लेकिन कप्तान हरमनप्रीत सिंह का कहना है कि खिलाड़ियों की प्रार्थना अपने मोंकों को भुनाना और विपक्षी टीम पर दबाव बनाना है ना कि रैंकिंग के बारे में सोचना। जीत की हैट्रिक के बाद, भारतीय टीम ने प्रो लीग के आखिरी घरेलू मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बुधवार रात शानदार प्रदर्शन किया और 2-2 (4-3 शूट आउट) की जीत हासिल की। इससे पहले भारत ने मौजूदा विश्व चैंपियन जर्मनी को 3-2 और और 6-3 से तथा ऑस्ट्रेलिया को 5-4 से हराया था। भारत के इस प्रदर्शन ने उसे प्रो लीग की फूल तालिका में आठ मैचों में 19 अंकों के साथ शीर्ष स्थान पर पहुंचा दिया है। स्पेन आठ मैचों में 17 अंकों के साथ दूसरे, अर्जेंटीना 13 अंकों के साथ तीसरे और विश्व चैंपियन जर्मनी 11 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है। इन परिणाम से भारत विश्व रैंकिंग में ऊपर आ गया है क्योंकि उसने रैंकिंग में अपने से ऊपर की टीमों को हराया है। भारत ने घर में जब अपना अभियान शुरू किया था तो वह विश्व रैंकिंग में छठे स्थान पर था जबकि जर्मनी पहले और ऑस्ट्रेलिया चौथे स्थान पर था। भारत अब रैंकिंग में चौथे स्थान पर आ गया है जबकि जर्मनी तीसरे स्थान पर खिसक गया है। प्रो लीग में 11 गोल के साथ शीर्ष स्कोरर हरमनप्रीत ने कहा, मुझे लगता है कि ये चीजें (विश्व रैंकिंग) हमारे लिए ज्यादा मायने नहीं रखती हैं। जब हम खेलते हैं तो हम इसका ध्यान नहीं रखते हैं। हमारी एकमात्र प्रार्थना मोंकों को भुनाना और विपक्षी टीम पर दबाव बनाना है। कुछ युवा खिलाड़ी, जिन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिला है, ने अपने और टीम के लिए अच्छे प्रदर्शन किया है।

## आईपीएल खेलने इंग्लैंड की नागरिकता लेंगे मो आभिर

दोहा । (एजेंसी)।

इंडियन प्रीमियर लीग क्रिकेट टूर्नामेंट (आईपीएल) के आकर्षण से पाकिस्तानी क्रिकेटर भी बचे नहीं रहे पाये हैं। समय-समय पर कई पाक क्रिकेटरों ने कहा है कि वे भारत की इस सबसे बड़ी क्रिकेट लीग में खेलना चाहते हैं पर राजनीति गतिरोध के कारण ऐसा नहीं कर पा रहे हैं। भारत ने आईपीएल के लिए पाक क्रिकेटरों को प्रतिबंधित कर रखा है। वहीं अब आईपीएल में खेलने के लिए पाक के पूर्व तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर इंग्लैंड की नागरिकता लेने जा रहे हैं। पूर्व क्रिकेटरों की लेजेन्ड लीग क्रिकेट के लिए यहां आये आमिर ने कहा , मुझे अभी ब्रिटिश नागरिकता नहीं

मिली है। अगले साल 2024 में नागरिकता मिलने की संभावना है। ऐसे में जब वे सब हो जाएंगे तो आगे का सोचा जाएगा। अभी भविष्य को लेकर कुछ नहीं कहा जा सकता है। उन्होंने कहा, भारत और पाक के बीच जो हालात है उस पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। कब क्या हो जाए कोई नहीं जानता है। हो सकता है कि मैं फिर पाकिस्तान के लिए खेलने लग जाऊं या फिर किसी दूसरे देश के लिए खेलने लूँ। ये सब अभी किसी को नहीं पता है। मैं समय से पहले अभी कुछ नहीं कह सकता हूँ। समय आने पर सबको पता चल जाएगा कि मेरी भविष्य की योजना क्या है। आमिर लेजेन्ड्स लीग क्रिकेट से पहले पाकिस्तान सुपर लीग में खेल रहे थे। आमिर ने अपने करियर की

शुरुआत में अपनी धारदार गेंदबाजी से सबको मिलने की संभावना है। ऐसे में जब वे सब हो जाएंगे तो आगे का सोचा जाएगा। अभी भविष्य को लेकर कुछ नहीं कहा जा सकता है। उन्होंने कहा, भारत और पाक के बीच जो हालात है उस पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। कब क्या हो जाए कोई नहीं जानता है। हो सकता है कि मैं फिर पाकिस्तान के लिए खेलने लग जाऊं या फिर किसी दूसरे देश के लिए खेलने लूँ। ये सब अभी किसी को नहीं पता है। मैं समय से पहले अभी कुछ नहीं कह सकता हूँ। समय आने पर सबको पता चल जाएगा कि मेरी भविष्य की योजना क्या है। आमिर लेजेन्ड्स लीग क्रिकेट से पहले पाकिस्तान सुपर लीग में खेल रहे थे। आमिर ने अपने करियर की



## कॉनवे के अर्धशतक से न्यूजीलैंड ने बनाये दो विकेट पर 155 रन

वेलिंगटन । न्यूजीलैंड ने सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे के अर्धशतक की सहायता से श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट टेस्ट क्रिकेट मैच के पहले दिन अपनी पहली पारी में दो विकेट पर 155 रन बनाए। बारिश के कारण पहले दिन के खेल में बाधा आई और मात्र 48 ओवर ही हो पाये। इस मैच में श्रीलंकाई टीम ने टॉस जीतकर न्यूजीलैंड को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया था। पारी की शुरुआत करते हुए कॉनवे ने 78 रन बनाये जबकि टॉम लैथम ने 21 रनों की पारी खेली। इन दोनों के ही बीच पहले विकेट के लिए 87 रन की साझेदारी हुई। खराब मौसम के कारण दिन का खेल समाप्त घोषित किये जाने के समय केन विलियमसन 26 और हेनरी निकोल्स 18 रनों पर खेल रहे थे। आज सुबह भारी बारिश के कारण सुबह के सत्र में खेल नहीं हो पाया। लंच के बाद ही टीमों में मैदान पर उतर पायीं। श्रीलंकाई टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया पर उसे उसे इसका लाभ नहीं मिला। कीवी बल्लेबाजों ने अच्छे बल्लेबाजी की। कॉनवे और लैथम ने अच्छे शुरुआत की। लैथम ने 21 रन बनाये पर वह बड़ी पारी नहीं खेल पाये। वहीं कॉनवे अपना आठवां अर्धशतक लगाने के बाद स्मिथ धनंजय डिसिल्वा की गेंद पर पेवेलियन लौट गये।

## अख्यर के नहीं होने से विश्वकप की तैयारियां प्रभावित होंगी : पांड्या

मुम्बई । (एजेंसी)।

भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने कहा है कि बल्लेबाज श्रेयस अख्यर की अनुपस्थिति से भारत के विश्वकप की तैयारियां प्रभावित होंगी। अख्यर पीट की चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के एकदिवसीय सीरीज से बाहर हो गये हैं। अभी वह कब तक मैदान में वापसी करेंगे। ये अभी तय नहीं हुआ है। अख्यर इस माह के अंत में शुरु हो रहे आईपीएल के शुरुआती मैचों से भी बाहर हो गये हैं। पांड्या ने कहा, "निश्चित तौर

पर श्रेयस की वापसी की कोई समय सीमा तय नहीं है पर हम अच्छे की उम्मीद कर रहे हैं। हम उनके जल्द से जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं। उन्होंने कहा, "उनके टीम में नहीं रहने का प्रभाव पड़ेगा और हमें उनकी कमी खलेगी। वहीं अगर वह जल्दी वापसी नहीं कर पाते हैं तो हमें कोई अन्य विकल्प तलाशना होगा। अगर वह टीम में आते हैं यह खुश की बात है पर अगर ऐसा नहीं होता है तो हमें अभी से इस बात पर विचार करना होगा कि किस प्रकार आगे जाना। विश्वकप से

ठीक पहले भारतीय टीम में खिलाड़ियों की फिटनेस प्रभावित हो रही है। तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह भी पीट की सर्जरी के कारण बाहर हैं। अब देखा है कि वह विश्वकप तक वापसी कर पाते हैं या नहीं। पांड्या ने कहा, "ऐसी कोई दीर्घकालिक योजना नहीं है। बुमराह पिछले कुछ समय से टीम के साथ नहीं हैं। उनके बाहर होने के बाद भी हमारे अन्य गेंदबाजों ने काफी अच्छे प्रदर्शन किया है। हमारे पास सभी



गेंदबाज अनुभवी हैं। बुमराह के होने से बड़ा अंतर पैदा होता है पर भी हमें उनसे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।



गेंदबाजों ने अब तक अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभाई है। आगे भी हमें उनसे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।



ट्रिनेन में घुड़सवारी रेस में भाग लेते हुए डेवी रुसल और अन्य प्रतियोगी।

## सूरत के सिविल और स्मीमेर अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड तैयार कर शुरू कर दिए गए हैं

सूरत। सूरत में मौसमी फ्लू के मामलों के साथ-साथ कोरोना के मामले धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं। स्वास्थ्य व्यवस्था को अलर्ट कर दिया गया है। सूरत के सिविल एंड स्मीयर हास्पिटल में कोरोना और H3N2 के लिए स्पेशल आइसोलेशन वार्ड तैयार किया गया है। सिविल अस्पताल में 10 बेड और स्मीमेर अस्पताल में 8 बेड का आइसोलेशन वार्ड तैयार कर शुरू कर दिया गया है। मौसमी फ्लू सिस्टम अलर्ट के साथ बढ़ रहे कोरोना के मामले सूरत वर्तमान में दोहरे मौसम का

अनुभव कर रहा है। साथ ही गर्मी के आते ही और मौसम में बदलाव के कारण मौसमी फ्लू के मामलों में अचानक से बढ़ोतरी हो रही है। ज्ञात हो कि वर्तमान में सिविल अस्पताल में रोजाना सोजनल फ्लू के 150 से 200 मामले सामने आ रहे हैं। इसके साथ ही शहर में धीरे-धीरे सूरत में गत दिवस 13 कोरोना पॉजिटिव 10 शहर से और तीन जिले से केस आए। जिसको लेकर सिस्टम को अलर्ट कर दिया गया है और एहतियात के तौर पर सिस्टम द्वारा तैयारियां कर ली गई हैं।

कोरोना और एच3एन2 के लिए आइसोलेशन वार्ड तैयार किए गए। शहर में मौसमी फ्लू के साथ कोरोना के धीरे-धीरे बढ़ते मामलों के कारण सूरत में नगर निगम प्राधिकरण द्वारा आपातकालीन नियंत्रण कक्ष शुरू किए जाने के बाद अब कोरोना और एच3एन2 के लिए आइसोलेशन वार्ड शुरू किया गया है। सूरत के सिविल अस्पताल में 10 बेड का आइसोलेशन वार्ड और स्मीमेर अस्पताल में 8 बेड का आइसोलेशन वार्ड शुरू किया गया है। नवी सिविल स्थित स्टाम्प सेल भवन में मौसमी फ्लू के मरीजों के लिए 10 बिस्तर का आइसोलेशन वार्ड शुरू किया गया है ताकि मौसमी फ्लू के मरीज पीड़ित न हों और उन्हें उचित इलाज मिल सके। सभी बेड ऑक्सीजन और वेंटिलेटर समेत जरूरी सुविधाओं से लैस हैं। कलेक्टर की बैठक के बाद आइसोलेशन वार्ड बनाया गया सिविल अस्पताल के अधीक्षक गणेश गोवंकर ने बताया कि कल कलेक्टर द्वारा सूरत नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने मौसमी फ्लू और कोरोना के मामलों को लेकर स्मीर अस्पताल के अधिकारियों और सिविल अस्पताल के डॉक्टरों के साथ बैठक बुलाई गई थी। जिसमें एहतियात के तौर पर मौसमी फ्लू के समुचित इलाज के लिए आइसोलेशन वार्ड तैयार करने के निर्देश दिए। कोरोना के अलावा मौसमी फ्लू के मरीजों को समुचित इलाज मिले और उन्हें आइसोलेट करने के लिए आइसोलेशन वार्ड शुरू किया गया है। यहां 10 बेड ऑक्सीजन और वेंटिलेटर सहित सुविधाओं से लैस हैं। हालांकि मरीजों के इलाज के लिए पूरी टीम तैयार है, लेकिन मरीजों की संख्या बढ़ी तो जरूरत के हिसाब से स्टाफ भी बढ़ाया जाएगा।

## 12साल बाद राजस्थान के 33वर्षीय मरीज को मिले नई हाथ ग्लोबल अस्पताल में हुई दोनों हाथ प्रत्यारोपन सर्जरी सफल



जोसतभाई के नेतृत्व में अन्य एक डॉक्टर की टीम ने यह सर्जरी की है। सर्जरी 16 घंटे तक चली। सर्जरी के बाद मरीज को 12साल बाद दुबारा हाथ मिले हैं। अजमेर के निवासी प्रेमा राम को खेत में काम करते समय बिजली का झटका लगा था। उसके हाथ बिजली से जल गए थे। उन्हें अजमेर के एक नजदीकी अस्पताल में दाखिल किया गया। डॉक्टरों ने उनकी जान बचाने के लिए उनके दोनों हाथ काटने की सलाह दी। मरीज के हाथ लगभग कंधे के स्तर तक कट गए थे। जिस कारण वह विकलांगों की तरह हो गए थे। हाथ प्रत्यारोपण के लिए मरीज के परिवार वालों ने काफी प्रयास किए। लेकिन कृत्रिम हाथ उपलब्ध न

होने के कारण मरीज 12साल तक विकलांगों की तरह जीवन जी रहा था। दैनिक गतिविधियों के लिए भी उन्हें परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता था। कंधे के स्तर पर हाथ का प्रत्यारोपण करना भारत में लगभग असंभव माना जाता था। प्रेमा राम के पिता ने भी युरोप में हाथ प्रत्यारोपण सर्जरी के बारे में पृष्ठछाछ की, लेकिन यह बहुत महंगा था और उनकी क्षमता से बाहर था। ऐसी स्थिति में भी मरीज ने उम्मीद नहीं खोई। उन्होंने अपनी पढाई जारी रखी और किसी दिन हाथ मिलाने की उम्मीद कर रहे थे। मुंबई के ग्लोबल अस्पताल में हाथ प्रत्यारोपण के बारे में उन्हें पता चला और उन्होंने अक्टूबर 2022 में प्रत्यारोपण सर्जरी के लिए पंजीकरण कराया।

## बाइक के डिवाइडर से टकराने से दो युवक पुल से 15 फीट नीचे गिर गए



सूरत। सूरत के पाल उमरा ब्रिज पर आज सुबह एक अजीबोगरीब हादसा हो गया। जिसमें पाल से उमरा जा रही एक बाइक पर सवार दो युवक पुल के डिवाइडर से टकराकर तीन फीट तक उछल गए और पुल खिसकने के बाद 15 फीट नीचे जा गिरे। जिससे दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए और स्थानीय लोगों ने

108 पर कॉल कर उन्हें तत्काल इलाज के लिए सिविल अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान एक की मौत हो गई है। सूरत में आए दिन हादसे होते रहते हैं शहर के पाल क्षेत्र से उमरा जाने वाले पुल पर आज सुबह एक बड़ा अजीब हादसा हो गया। दो युवक बाइक पर पाल से उमरा जा रहे थे। दोनों युवक पूरी रफ्तार में बाइक चला रहे थे, तभी पुल के उमरा की तरफ दुर्घटनाग्रस्त हो गए। बाइक सवार स्टेयरिंग से नियंत्रण खो बैठा और पुल के अंत में डिवाइडर से जा टकराया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। दोनों युवक पूरी स्पीड में बाइक चला रहे थे। उमरा की ओर पुल पर डिवाइडर से टकराने के बाद दोनों युवक तीन फीट हवा में उछल गए। हादसा इतना विकराल और गंभीर था कि दोनों युवक हवा में उछले और पुल के ऊपर से 15 फीट नीचे जा गिरे। जब बाइक का पहिया मुड़ गया। हादसे के बाद आसपास के इलाके से स्थानीय लोग दौड़ पड़े। 108 को कॉल कर दोनों युवकों को तत्काल उपचार के लिए सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। हादसे की जानकारी के अनुसार दोनों युवकों को इलाज के लिए 108 के माध्यम से सिविल अस्पताल रेफर कर दिया गया। दोनों का इलाज इमरजेंसी वार्ड में चल रहा था। दो युवकों में से एक की हालत इतनी गंभीर थी कि उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना पुलिस को देने के बाद पुलिस कर्मी भी मौके पर पहुंचे और जांच पड़ताल की। सिविल अस्पताल से मिली जानकारी के अनुसार एक युवक का नाम खलीलुल्लाहम और दूसरे युवक का नाम तुर्ब अली है। साथ ही दोनों युवक बंगाल के रहने वाले थे। वह 13 अप्रैल यानी 4 दिन पहले सूरत आया था। वह सूरत में अकेला रहता था। दोनों का परिवार बंगाल में रहता है। तुर्ब अली की मृत्यु हो गई। उनके सिर में गंभीर चोट आई है।

## गुजरात के कई जिलों में बेमौसमी बारिश, कई जगह गरज के साथ ओले भी बरसे

अहमदाबाद। मौसम विभाग की भविष्यवाणी के मुताबिक गुजरात के कई जिलों में आज बेमौसमी बारिश ने किसानों की चिंता बढ़ा दी। कई जगह गरज के साथ ओले भी बरसने की खबर है। राज्य के अमरेली, गिर सोमनाथ, बोटाद और डांग जिले में बेमौसमी बारिश होने से आम, गेहूं, जौरा और चना की फसलों को नुकसान होने की किसानों को आशंका है। बता दें कि मौसम विभाग ने पहले ही राज्य में पांच दिनों के दौरान बेमौसमी बारिश की भविष्यवाणी कर दी थी। जिसके मुताबिक बुधवार के बाद गुरुवार को भी राज्य में कई जगह बारिश हुई। सौराष्ट्र के अमरेली जिले में फिर एक बार बेमौसमी बारिश होने से किसानों की चिंता में इजाफा हुआ है। अमरेली जिले में धारी के ग्रामीण क्षेत्रों में बारिश हुई है। इसके अलावा जिले के खांभा, सावरकुंडला के आसमान में बादल छाए हुए हैं और कभी कभी बारिश होने की संभावना है। बोटाद जिले का भी वातावरण बदल गयी है। बोटाद के गढ़डा शहर समेत ग्रामीण इलाकों में ओले के साथ बारिश होने की खबर है। बोटाद के पडवदर, समढियाला, सीतापर समेत गांवों में ओले के साथ बारिश हुई है। गढ़डा समेत ग्रामीण क्षेत्रों में बारिश होने से केसर आम, गेहूं और चना की फसलों को नुकसान होने की आशंका है। दूसरी ओर दक्षिण गुजरात के डांग जिले में बेमौसमी बारिश हुई है। डांग जिले के



सापूतारा में तेज हवा और गरज के साथ बारिश होने से जगदगुरु नरेन्द्राचार्यजी के पादुका दर्शन कार्यक्रम के लिए बनाया गया मंडल उड़ गया। डांग जिले में तेज हवा और गरज के साथ बारिश होने के कारण प्याज, सब्जी और स्टोबेरी की फसल को नुकसान होने की किसानों को आशंका है।

## पति के साथ रह रही महिला की कस्टडी मांगने हाई कोर्ट पहुंचा शख्स



गांधीनगर। अपनी पत्नी के साथ रह रही युवती की मांग से हैरान हुए और उसके पति से कस्टडी मांगने के लिए शख्स पर 5000 रुपये का जुर्माना लगाकर

मामले को खारिज किया। शख्स का कहना था कि वह अपनी गर्लफ्रेंड के साथ लिव इन रिलेशनशिप में था और दोनों के बीच समझौता हुआ था। यह मामला गुजरात बनासकांठा जिले का है। शख्स ने हाईकोर्ट में अर्जी दाखिल करके कहा कि वह जिस महिला की कस्टडी मांग रहा है, उसका साथ कभी रिलेशनशिप में था। शख्स ने दावा किया कि उसकी बिना मर्जी के ही शादी कराई गई थी। उसकी अपनी पति से आज भी नहीं बनती। महिला अपने पति को छोड़कर उसके साथ रहने भी आ गई थी। इसके बाद दोनों ने एक लिव इन रिलेशनशिप अप्रीमेंट किया था। युवक ने अर्जी में कहा कि हम लिव इन में रह रहे थे। तभी युवती के ससुराल वाले आए और महिला को जबरन अपने साथ ले गए। युवक ने कहा कि मेरी गर्लफ्रेंड को जबरदस्ती उसके ससुराल वालों ने रखा है, और वह उनके साथ रहना नहीं चाहती। युवक की अर्जी का गुजरात सरकार ने विरोध कर कहा कि उसके पास महिला की कस्टडी मांगने का कोई अधिकार नहीं है। राज्य सरकार के वकील ने कहा कि महिला अपने पति के साथ रह रही है। यह नहीं कहा जा सकता कि उसे अवैध तौर पर साथ रखा गया है। केस की सुनवाई के बाद जस्टिस वीएच पंचोली और जस्टिस एचएम प्राच्छक की बेंच ने कहा कि अर्जी दाखिल करने वाले शख्स की शादी महिला के साथ नहीं हुई है। इसके अलावा उसने अपने पति को तलाक भी नहीं दिया है।

## एक पहल फाउंडेशन टीम ब्यावर द्वारा स्कूल में सात दरिया और 500 सैनेट्री नैपकिन पैड उपलब्ध कराए गए



ब्यावर राजस्थान: चंद्रकांत सौ पोजारी ब्यावर शहर की एक पहल फाउंडेशन टीम शहर के विद्यालयों की स्थिति को सुधारने के लिए कृत संकल्प है। टीएम सदस्यों द्वारा विद्यालयों को विजिट किया जाता है और वहाँ की भौतिक स्थिति का अवलोकन कर विद्यालय हित में आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। इसी क्रम में फाउंडेशन टीम के सचिव श्री राजेन्द्र सोनी द्वारा आज रा. वि. संदड़ा रोड, ब्यावर को बालिकाओं के बैठने हेतु सात दरिया और 500 सैनेट्री नैपकिन पैड उपलब्ध कराए गए। इस अवसर पर विद्यालय ईवाज श्रीमती शकुन्तला सोढ़ा द्वारा संस्था सचिव श्री राजेन्द्र सोनी का आभार व्यक्त किया गया। उपस्थित विद्यालय स्टाफ द्वारा भी सभी संस्था सदस्यों का आभार प्रकट किया गया।

## क्या अपनी पहली जीवन बीमा पॉलिसी ले रहे हैं? आप अपने पहले वर्ष के प्रीमियम पर अब पा सकते हैं 10% तक की आकर्षक छूट!

पुणे। तम प्लान के कई महत्व हैं। और इस बात को सिफारिश भी है कि प्रत्येक व्यक्ति, विशेष रूप से परिवार के कमाऊ सदस्य के पास यह होना ही चाहिए ताकि परिवार के मुख्य पालक को दुखद मृत्यु की स्थिति में आश्रित परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित रह सके। कम उम्र में खरीदे जाने पर ये तम प्लान अपेक्षितया किफायती कीमत पर मिल जाते हैं। अपने परिजन की सुरक्षा के लिए अधिकाधिक लोगों को प्रोत्साहित करने हेतु, भारत के प्रमुख निजी जीवन बीमाकर्ताओं में से एक, बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस ने एक नई पहल की घोषणा की है। बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस ने पहली बार व्यक्तिगत तम प्लान लेने वालों के लिए इंडस्ट्री में पहली बार छूट देने की घोषणा की है। ग्राहक, बजाज आलियांज लाइफ के प्रमुख तम प्लान - बजाज आलियांज लाइफ ईच और बजाज एलियांज लाइफ स्मार्ट प्रोटेक्शन गोल पर 10% (संचयी) छूट का लाभ उठा सकते हैं और अपने प्रियजनों के जीवन लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। कंपनी पहली बार जीवन बीमा पॉलिसी खरीदने वालों को तम प्लान के पहले साल

के प्रीमियम पर 5% की विशेष छूट दे रही है। इसके अतिरिक्त, वेतनभोगी ग्राहक 5% की विशेष छूट का लाभ उठा सकते हैं, जिससे उनके पहले साल के प्रीमियम पर कुल 10% तक की छूट मिल जाएगी। ये आकर्षक मूल्य वाले तम प्लान बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस के सभी वितरण बिंदुओं पर उपलब्ध हैं। उद्योग की इस प्रथम पहल के लॉन्च के बारे में बताते हुए, बजाज आलियांज लाइफ के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री तरुण चुग ने कहा, "हमारा जोर जीवन बीमा को किफायती और आसान बनाना है, ताकि अधिक से अधिक ग्राहक हमारे द्वारा प्रदत्त उत्पादों का लाभ उठा सकें। तम प्लान किसी भी वित्तीय पोटेंशियल को एक अनिवार्य हिस्सा होने के साथ-साथ ऐसे महत्वपूर्ण उत्पाद हैं जो ग्राहकों के मन को शांति देते हैं। मुझे विश्वास है कि यह उद्योग-प्रथम पहल अपनी जीवन बीमा यात्रा शुरू करने वाले पॉलिसीधारकों के लिए बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस को उनकी पहली पसंद बनने में सक्षम बनाएगी और इस तरह देश के भीतर बीमा की पैठ बढ़ाने में मदद करेगी।"

## मॉर्टीन ने दमदार सुरक्षा के लिए लॉन्च किया वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित मॉर्टीन स्मार्ट+



दिल्ली। भारत के जाने-माने घरेलू कोटेशनर ब्रांड मॉर्टीन ने तकनीकी रूप से एडवांस अपने नए लिफ्टिंग वेपोरिज्ड मॉर्टीन स्मार्ट+ के लॉन्च की घोषणा की है। गुरुग्राम के एंबियंस मॉल में स्थित पीवीआर सिनेमा में ग्राहकों के साथ एक खास कार्यक्रम के दौरान कंपनी ने मॉर्टीन स्मार्ट+ को लॉन्च किया। भारत का सबसे तेज़

और सबसे शक्तिशाली फॉर्मूला\*\* मॉर्टीन स्मार्ट+ को स्विच ऑफ करने के बाद भी यह 2 घंटे तक मच्छरों से सुरक्षा प्रदान करता है। आज के समय में मच्छर से पैदा होने वाली बीमारियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। हमें हर साल डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों के मामलों की संख्या में वृद्धि देखने को मिल रही है। इससे सुरक्षा के लिए हमें अब बेहतर मॉर्टीन स्मार्ट+ के लॉन्च की घोषणा की है। गुरुग्राम के एंबियंस मॉल में स्थित पीवीआर सिनेमा में ग्राहकों के साथ एक खास कार्यक्रम के दौरान कंपनी ने मॉर्टीन स्मार्ट+ को लॉन्च किया। भारत का सबसे तेज़ गुरुग्राम स्थित मॉर्टीन एडवांस्ड रिसर्च लैब में परीक्षण किया गया है और यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित एक बेहतर समाधान साबित हुआ है। यह तेजी से काम करता है और स्विच ऑफ करने के 2 घंटे बाद भी यह बीमारी पैदा करने वाले मच्छरों से बेहतर सुरक्षा प्रदान करता है। लॉन्च के मौके पर बात करते हुए श्री सोरभ जैन, रीजल मार्केटिंग डायरेक्टर, हाइजीन, रिकेट - साउथ एशिया ने कहा, चह्दोवेशन हमेशा से मॉर्टीन के डीएनए में शामिल रहा है और हम मच्छरों से पैदा होने वाले रोगों से आपके परिवार को सुरक्षित बनाने के लिए हमेशा बेहतर समाधान पेश कर रहे हैं और ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हाल ही में लॉन्च किया गया, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित मॉर्टीन स्मार्ट+ एक एडवांस मॉर्टीन स्मार्ट+ रीपेलेंट के साथ पहले से बेहतर सुरक्षा प्रदान कर रहा है। इसमें भारत का सबसे तेज़ फॉर्मूला\*\* दिया गया है और स्विच ऑफ करने के 2 घंटे बाद भी इसका असर बना रहता है। इसकी मदद से यह हमारे परिवारों को मच्छरों से लंबे समय तक सुरक्षित रखता है। हम हमेशा से ग्राहकों को अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीक के साथ विशेषज्ञ सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्धता रहे हैं। यह नया प्रोडक्ट हमारी इसी कोशिश का प्रमाण है। इसके साथ ही यह नया प्रोडक्ट 2030 तक भारत को मलेरिया मुक्त बनाने के हमारे लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।"